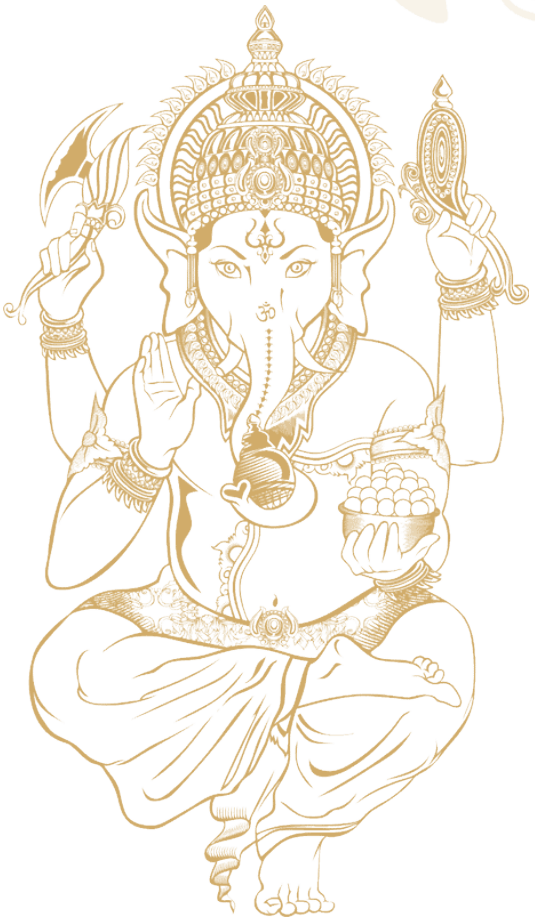

Chirag Aakanksha

Model: Horoscope-Matching

Order No: 120489601

Model: Horoscope-Matching

Order No: 120489601 Date: 10/12/2025

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
31-01/02/1998	जन्म तिथि	30/11/1997
शनि-रविवार	दिन	रविवार
घंटे 01:10:00	जन्म समय	21:05:00 घंटे
घटी 44:58:06	जन्म समय(घटी)	35:21:56 घटी
India	देश	India
Gurgaon	स्थान	Noida
28:27:00 उत्तर	अक्षांश	28:40:00 उत्तर
77:01:00 पूर्व	रेखांश	77:26:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:21:56	स्थानिक संस्कार	-00:20:16 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
07:10:45	सूर्योदय	06:55:00
18:01:04	सूर्यास्त	17:22:51
23:49:45	चित्रपक्षीय अयनांश	23:49:35

तुला	लग्न	कर्क
शुक्र	लग्न लग्नाधिपति	चन्द्र
मीन	राशि	वृश्चिक
गुरु	राशि-स्वामी	मंगल
उ०भाद्रपद	नक्षत्र	ज्येष्ठा
शनि	नक्षत्र स्वामी	बुध
1	चरण	2
शिव	योग	धृति
बव	करण	बव
दू-दूधेश्वर	जन्म नामाक्षर	या-यामिनी
कुम्भ	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	धनु
विप्र	वर्ण	विप्र
जलचर	वश्य	कीटक
गौ	योनि	मृग
मनुष्य	गण	राक्षस
मध्य	नाड़ी	आद्य
सर्प	वर्ग	मृग

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
शनि 14वर्ष 8मा 4दि		22:09:54	तुला	लग्न	कर्क	06:16:25	बुध 11वर्ष 1मा 0दि	
बुध		17:54:11	मक	सूर्य	वृश्चि	14:38:30	शुक्र	
06/10/2012		06:21:54	मीन	चंद्र	वृश्चि	21:18:24	01/01/2016	
07/10/2029		11:14:16	कुंभ	मंगल	धनु	22:29:07	01/01/2036	
बुध	05/03/2015	03:20:29	मक	बुध	धनु	06:02:32	शुक्र	02/05/2019
केतु	01/03/2016	05:18:46	कुंभ	गुरु	मक	22:40:13	सूर्य	01/05/2020
शुक्र	31/12/2018	25:09:52	धनु व	शुक्र	धनु	28:52:03	चन्द्र	31/12/2021
सूर्य	07/11/2019	21:35:50	मीन	शनि व	मीन	19:56:00	मंगल	02/03/2023
चन्द्र	07/04/2021	16:55:23	सिंह	राहु व	सिंह	22:00:35	राहु	02/03/2026
मंगल	04/04/2022	16:55:23	कुंभ	केतु व	कुंभ	22:00:35	गुरु	31/10/2028
राहु	22/10/2024	15:02:58	मक	हर्ष	मक	11:49:59	शनि	01/01/2032
गुरु	27/01/2027	06:16:20	मक	नेप	मक	04:06:04	बुध	31/10/2034
शनि	07/10/2029	13:48:40	वृश्चि	प्लूटो	वृश्चि	11:45:39	केतु	01/01/2036

व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

23:49:45 चित्रपक्षीय अयनांश 23:49:35

लग्न-चलित

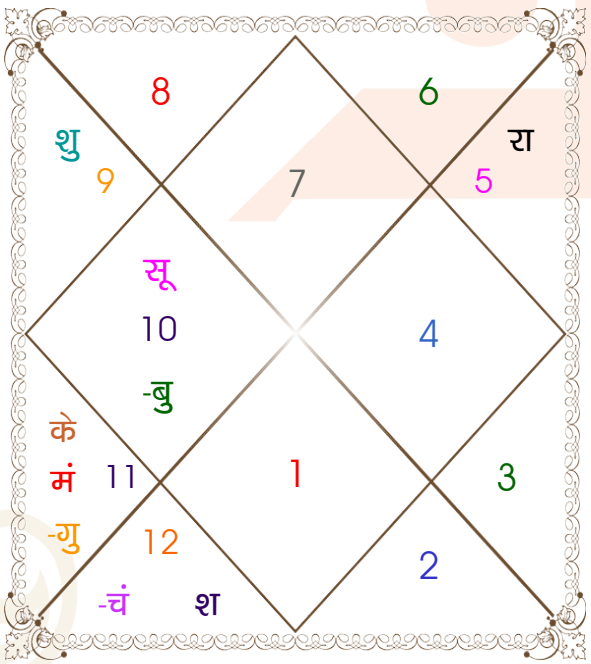

लग्न-चलित

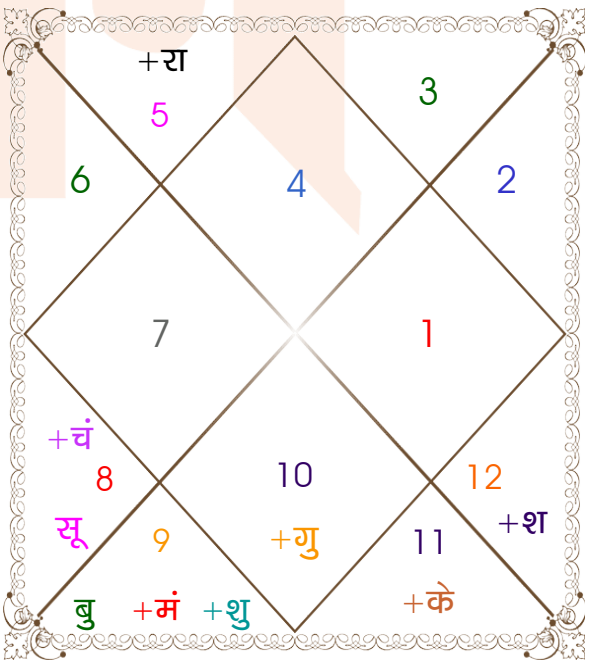

भक्ति शक्ति ज्योतिष केंद्र
पं गोकुल चंद शर्मा
मकान नं-389, सेक्टर 17A, गुरुग्राम, हरियाणा
9312257830

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	विप्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	जलचर	कीटक	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	अतिमित्र	सम्पत	3	3.00	--	भाग्य
योनि	गौ	मृग	4	3.00	--	यौन विचार
मैत्री	गुरु	मंगल	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	राक्षस	6	0.00	हाँ	सामाजिकता
भकूट	मीन	वृश्चिक	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	आद्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	21.00		

कुल : **21 / 36**

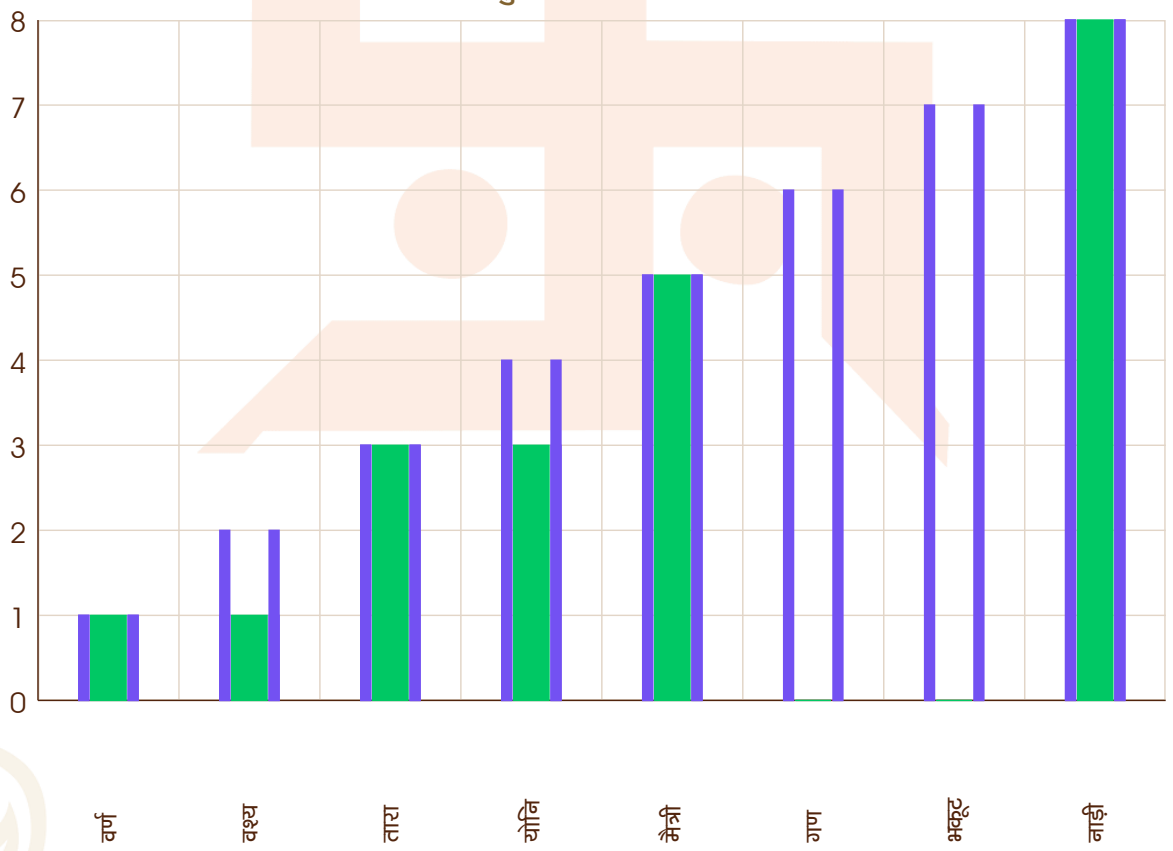

भक्ति शक्ति ज्योतिष केंद्र
पं गोकुल चंद शर्मा
मकान नं-389, सेक्टर 17A, गुरुग्राम, हरियाणा
9312257830

अष्टकूट मिलान

गणदोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों मे मित्रता है।

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

Chirag का वर्ग सर्प है तथा Aakanksha का वर्ग मृग है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार Chirag और Aakanksha का मिलान शुभ है।

मंगलीक दोष मिलान

Chirag मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में पंचम् भाव में स्थित है।

Aakanksha मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है।

Chirag तथा Aakanksha में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

Chirag का वर्ण ब्राह्मण तथा Aakanksha का वर्ण भी ब्राह्मण है अतः यह मिलान अति उत्तम है। जिसके कारण दोनों के गुण, स्वभाव, आदतें, पसन्द एवं नापसंद सभी एक-समान होंगी। दोनों एक-दूसरे के बिल्कुल अनुरूप एवं अनुकूल साबित होंगे तथा दोनों हमेशा सामाजिक, व्यावसायिक एवं पारिवारिक उत्तरदायित्वों के निर्वहन में एक-दूसरे की सहायता करेंगे।

वश्य

Chirag का वश्य जलचर है एवं Aakanksha का वश्य कीट है। जिसके कारण यह मिलान औसत मिलान है। जलचर एवं कीट वश्य न तो एक-दूसरे के मित्र होते हैं और न ही शत्रु होते हैं। अर्थात दोनों एक-दूसरे के प्रति सम होते हैं। जलचर Chirag एवं कीट Aakanksha के बीच वैवाहिक संबंध होने पर दोनों के बीच उदासीनता के साथ-साथ प्रेम का अभाव भी बना रहेगा जिससे जीवन बिल्कुल नीरस हो सकता है। अधिकतर समय दोनों एक-दूसरे के बीच समझौता करके अपना जीवन यापन करते रहेंगे किंतु समय-समय पर जैसे डंक मारना कीट का नैसर्गिक स्वभाव होता है। उसी प्रकार Chirag को हमेशा सावधान रहना पड़ेगा अन्यथा उसे इसका खामियाजा भुगतना पड़ सकता है।

तारा

Chirag की तारा अतिमित्र तथा Aakanksha की तारा सम्पत है। अतः दोनों की तारा अनुकूल होने के कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। यह विवाह वैवाहिक जीवन एवं परिवार के लिए चहुंमुखी समृद्धि का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा। साथ ही दोनों एक-दूसरे के लिए काफी भाग्यशाली साबित होंगे। Chirag हमेशा Aakanksha के साथ मित्रवत व्यवहार करता रहेगा तथा उसे असीम प्रेम एवं प्यार देता रहेगा। इनके बच्चे भी काफी बुद्धिमान, भाग्यशाली, आज्ञाकारी एवं सफल होंगे।

योनि

Chirag की योनि गौ है तथा Aakanksha की योनि मृग है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं है। परन्तु इन दोनों योनि के बीच मित्रता का संबंध है अतः यह मिलान उत्तम मिलान रहेगा। जिसके कारण दोनों के बीच परस्पर प्रेम का भाव रहेगा। वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन में सौहार्द्रपूर्ण वातावरण रहेगा। दोनों एक दूसरे को सहयोग करेंगे। आपसी समझ एवं विश्वास की भावना रहेगी। जिससे अपने पारिवारिक व वैवाहिक जीवन में सभी कार्य आपसी सहमति से करेंगे एवं उनमें सफलता भी प्राप्त करेंगे। जीवन में अक्सर धन प्राप्ति के सुअवसर मिलते रहेंगे। आय के नये-नये स्रोत बनेंगे तथा अच्छी आय के साथ-साथ अच्छी जमापूंजी होगी तथा परिवार में सुख समृद्धि बढ़ेगी। परस्पर प्रेम एवं सौहार्द्र की भावना के कारण दोनों एकदूसरे के प्रति अपनापन महसूस करेंगे। परिवार में शांति का वातावरण बना रहेगा। साथ ही सभी

मनोकामनाओं की पूर्ति होती रहेगी। वर और कन्या का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। इन दोनों से उत्पन्न संतानें योग्य होंगी तथा वे भी अपने जीवन में सफलता प्राप्त करेंगे। इनके जीवन में सफलता इनके कदम चूमेगी। इस प्रकार इनका वैवाहिक जीवन सुखमय जीवन ही रहेगा।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में Chirag एवं Aakanksha दोनों के राशि स्वामी परस्पर मित्र हैं। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से अति उत्तम मिलान है। ज्यातिष की दृष्टि से यदि Chirag एवं Aakanksha के राशिस्वामी परस्पर मित्र होने के कारण इसे अति उत्तम मिलान माना जाता है। जिसके कारण Chirag एवं Aakanksha जीवन की हर खुशी एवं सुख प्राप्त करने में सफल होंगे तथा इनमें परस्पर विश्वास, प्रेम, समझ एवं सहयोग की भावना बनी रहेगी। साथ ही हर प्रकार की सुख-सुविधाओं एवं वैभव से परिपूर्ण होंगे।

गण

Chirag का गण मनुष्य तथा Aakanksha का गण राक्षस है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। अतः Aakanksha का निर्दयी, निष्ठुर एवं कड़ा स्वभाव रहेगा जिसके कारण Chirag एवं उसके परिवार के सदस्यों का जीवन कष्टपूर्ण हो सकता है। साथ ही पति-पत्नी के बीच अक्सर लड़ाई-झगड़ा बना रह सकता है। जिसके कारण तलाक एवं मुकदमे की संभावना भी बन सकती है।

भकूट

Chirag से Aakanksha की राशि नवम भाव में स्थित है तथा Aakanksha से Chirag की राशि पंचम भाव में स्थित है जिसके कारण यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। क्योंकि इसमें नवम-पंचम का वैधव्य दोष लग रहा है। जिसके कारण लड़ाई-झगड़े, मुकदमेबाजी, तलाक एवं अनहोनी घटनाएं घट सकती हैं। Chirag की प्रवृत्ति लॉटरी, सट्टेबाजी, जुआ आदि में धन बर्बाद करने की हो सकती है। अपनी इन बुरी आदतों के कारण पति-पत्नी के बीच कोई प्रेम शेष नहीं रह पाता। फिर भी यह विवाह स्वीकार्य है यदि दोनों के राशि स्वामी एक-दूसरे के मित्र हैं।

नाड़ी

Chirag की नाड़ी मध्य है तथा Aakanksha की नाड़ी आद्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान नहीं है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोष मुक्त है। अर्थात यह मिलान अति उत्तम मिलान है। आद्य एवं मध्य नाड़ी का समन्वय अति उत्तम होता है क्योंकि यह जीवनी शक्ति को संतुलित करता है। तीनों जीवनी शक्तियों वात, पित्त एवं कफ का संतुलन जीवन के अस्तित्व के लिए आवश्यक है। अतः आपकी संतान उत्तम स्वास्थ्य, जनन क्षमता एवं स्वस्थ तथा बुद्धिमान संतान होंगी।

मेलापक फलित

स्वभाव

Chirag की जन्म राशि जलतत्व युक्त मीन तथा Aakanksha की राशि भी जलतत्व युक्त वृश्चिक राशि है। अतः तत्वों में नैसर्गिक समानता होने के कारण इनमें स्वभावगत समानताएं विद्यमान होंगी जिससे दाम्पत्य संबध मधुर रहेंगे तथा वैवाहिक जीवन सुखी रहेगा। अतः मिलान उत्तम रहेगा।

Chirag की जन्म राशि का स्वामी बृहस्पति तथा Aakanksha की जन्म राशि का स्वामी मंगल परस्पर मित्र राशियों में स्थित है। सुखी दाम्पत्य जीवन के लिए यह स्थिति उत्तम रहेगी इसके प्रभाव से Chirag और Aakanksha का आपस में प्रेम, सहानुभूति तथा समर्पण का भाव रहेगा तथा सुख दुख में एक दूसरे को पूर्ण सुख तथा सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। एक सच्चे मित्र की तरह गुणों की प्रशंसा तथा कमियों की उपेक्षा करेंगे। इससे परस्पर तनाव तथा विश्वास के भाव में वृद्धि होगी तथा सुखी दाम्पत्य जीवन व्यतीत करने में इनको सफलता प्राप्त होगी।

Chirag एवं Aakanksha की राशियां परस्पर नवम एवं पंचम भाव में पड़ती हैं। शास्त्रानुसार यह भकूट दोष माना जाता है। इसके प्रभाव से उपरोक्त शुभ फलों में न्यूनता आएगी तथा परस्पर स्वार्थ एवं अंहकार के भाव में वृद्धि होगी जिससे संबंधों में तनाव तथा कटुता का वातावरण बनेगा तथा दाम्पत्य जीवन में अनावश्यक समस्याएं तथा परेशानियां उत्पन्न होंगी। अतः यदि Chirag और Aakanksha परस्पर सामंजस्य की प्रवृति तथा बुद्धिमता से कार्य लें तो उपरोक्त दुष्प्रभावों में न्यूनता हो सकती है तथा जीवन में शांति तथा प्रसन्नता की अनुभूति करने में दोनों समर्थ हो सकते हैं।

Chirag का वश्य जलचर तथा Aakanksha का वश्य कीट है। जलचर एवं कीट के मध्य नैसर्गिक मित्रता होने के कारण इनकी अभिरूचियों में समानता रहेगी तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर आवश्यकताएं भी एक ही होंगी। फलतः काम संबधों में एक दूसरे को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में समर्थ होंगे जिससे वैवाहिक जीवन सुख शांति एवं प्रसन्नता से युक्त रहेगा।

Chirag एवं Aakanksha दोनों का वर्ण ब्राहमण है। अतः इनकी कार्य क्षमता समान रहेगी तथा शैक्षणिक, धार्मिक तथा अन्य सत्कार्यो को करने में तत्पर होंगे फलतः इनकी कार्य क्षेत्र की स्थिति सुदृढ़ रहेगी।

धन

Chirag का जन्म अतिमित्र तथा Aakanksha का सम्पत नामक तारा में हुआ है। इसके प्रभाव से Aakanksha एक धनवान तथा भाग्यशाली महिला होंगी तथा Aakanksha के शुभ प्रभाव से उनकी आर्थिक स्थिति में नित्य वृद्धि होती रहेगी। भकूट का प्रभाव इनकी आर्थिक स्थिति पर सम रहेगा। अतः स्वपरिश्रम से ही इच्छित धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही मंगल

का भी कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। इस प्रकार Chirag और Aakanksha आरामदायक जीवन व्यतीत करने में समर्थ होंगे।

Chirag और Aakanksha को लाटरी, सट्टे या अन्य स्रोतों से अनायास धन प्राप्ति की संभावना होगी। साथ ही विभिन्न प्रकार के भौतिक संसाधनों का वे उपभोग करने में सफलता प्राप्त करेंगे। इसके अतिरक्त वे जायदाद तथा आभूषण आदि को भी अर्जित करने में समर्थ होंगे।

स्वास्थ्य

Chirag की नाड़ी मध्य तथा Aakanksha की नाड़ी आद्य है। अतः दोनों का जन्म अलग अलग नाड़ियों में होने के कारण यह मिलान उत्तम रहेगा। इसके शुभ प्रभाव से अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को यथा समय सम्पन्न करने में वे समर्थ होंगे जिससे दाम्पत्य जीवन की खुशहाली तथा सन्तुष्टि बनी रहेगी तथा समय भी सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा। साथ ही मंगल का भी किसी के स्वास्थ्य पर कोई दुष्प्रभाव नहीं है। अतः दोनों स्वस्थ तथा प्रसन्नचित रहकर अपना जीवन व्यतीत करने में सफल होंगे।

संतान

यथोचित समय पर संतति प्राप्ति की दृष्टि से Chirag और Aakanksha का मिलान विशेष अच्छा नहीं रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें संतति प्राप्ति में विलम्ब होगा तथा बच्चों के मध्य भी जन्म समय में असामान्य अंतर रहेगा जिससे उनके पालन पोषण में यदा कदा असुविधा की अनुभूति होगी। इसके साथ ही Chirag और Aakanksha की संतति में पुत्र तथा कन्याओं की संख्या समान रहेगी।

Aakanksha के मन में अन्य सामान्य महिलाओं की तरह प्रसव के विषय में चिन्ता तथा भय का भाव व्याप्त रहेगा परन्तु Aakanksha को ऐसी अनावश्यक चिन्ताओं से मुक्त रहना चाहिए क्योंकि उनका प्रसव सामान्य रूप से सम्पन्न होगा तथा इसमें किसी भी प्रकार का अनावश्यक कष्ट या परेशानी उत्पन्न नहीं होगी। तथापि सावधानी वश Aakanksha को गर्भावस्था में उचित डाक्टरी परीक्षण नियमित रूप से करवाते रहना चाहिए। इससे वह सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में समर्थ होंगी तथा स्वयं का स्वास्थ्य भी अनुकूल रहेगा। साथ ही Aakanksha के पति एवं सास-ससुर भी उससे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।

बच्चों की अनुकूल प्रगति से Chirag और Aakanksha उनसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे तथा बच्चे भी अपनी व्यवहार कुशलता योग्यता तथा बुद्धिमता से अपने क्षेत्र में सफलता एवं प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। साथ ही अन्य सामाजिक जन भी उनसे प्रसन्न तथा प्रभावित रहेंगे। माता पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण आदर तथा आज्ञा पालन का भाव रहेगा परन्तु पिता की अपेक्षा माता के प्रति उनके मन में विशेष लगाव होगा एवं उनकी इच्छा के विरूद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार Chirag और Aakanksha का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

Aakanksha के अपने ससुराल पक्ष के लोगों से अच्छे संबध रहेंगे साथ ही अन्य जनों की अपेक्षा सास से संबधों में अधिक मधुरता रहेगी। विवाह के बाद Aakanksha अत्यंत ही धैर्य एवं परस्पर सामजंस्यता के भाव का पालन करेंगी। उनका यह धैर्य एवं सामंजस्यता का भाव भविष्य में उनके लिए अनुकूल सिद्ध होगा।

साथ ही ससुर के साथ भी सामंजस्य स्थापित करने में उन्हें कोई परेशानी नहीं होगी। अपनी मधुर वाणी एवं विनम्र व्यवहार से उनके हृदय को जीतने में समर्थ रहेंगी। इसी प्रकार अपनी मुक्त मित्रता की प्रवृति के कारण देवर एवं ननदों से भी संबध अनुकूल रहेंगे तथा उनकी ओर से Aakanksha पूर्ण सहयोग अर्जित करने में समर्थ रहेंगी।

यद्यपि Aakanksha अपनी ओर से समस्त ससुराल पक्ष के लोगों को सन्तुष्ट एवं प्रसन्न करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी परन्तु इन लोगों से इन्हें कोई विशिष्ट सहयोग नहीं मिलेगा तथा संबधो में औपचारिकता अधिक रहेगी।

ससुराल-श्री

Chirag के अपनी सास से मधुर संबंध रहेंगे तथा आपसी सामंजस्य से इसमें निरन्तर वृद्धि होती रहेगी। सास को Chirag अपनी माता के समान आदर प्रदान करेंगे तथा उनकी सेवा तथा सुख सुविधा का भी ध्यान रखेंगे। साथ ही समय समय पर सपत्नीक उनके यहां मिलने जाया करेंगे जिससे संबंधों की प्रगाढ़ता में वृद्धि होगी।

ससुर के साथ भी Chirag के संबंधों में मधुरता रहेगी। साथ ही उन का भी इनके प्रति विशेष वात्सल्य रहेगा। व्यक्तिगत मामलों तथा आपसी संबंधों में मित्रता का भाव भी दृष्टिगोचर होगा जिससे एक दूसरे की बातों का आदान प्रदान होता रहेगा। साथ ही साली एवं सालों से भी संबंधों में मित्रता सहानुभूति तथा सहयोग का भाव रहेगा तथा एक दूसरे से औपचारिक संबंध रहेंगे।

इस प्रकार ससुराल के लोगों का दृष्टिकोण Chirag के प्रति सम्मानीय रहेगा तथा वे उनके व्यवहार से प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।